वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी – 2022



महोत्सव मुबारक 2021

बाकि पृष्ठ 28

मुझमें से पर, मुझे देखने की फुर्सत नहीं है और गुरू के असर यह भी दिखाते हैं कि जहाँ मुझे अपनी नीचता को देखने की फुर्सत नहीं है, इच्छा नहीं हैं वहाँ यह भी सामने आता है कि मेरी इतनी औकात भी नहीं है कि मैं यह सब देख सकूँ।

सारे प्रोग्राम में रहने खाने-पीने आदि की बहुत सेवाएँ पाईं। अनेक धर्म सम्बन्धीयों से मिलने का सुअवसर मिला। गुरू महाराज की जिन्दा संगत, जिन्दा प्रभावों, विशेष सभाओं व सम्बन्धियों के बीच समय बिताया उसके लिए बहुत हर्ष है व बहुत-2 धन्यवाद।

दिल में मलाल है कि ऐसे अद्वितीय गुरू की ऐसी नायाब संगत से दूर रहना पड़ रहा है। काश! ऐसे हालात बनें कि जीवन की सफलता का मार्ग बना सकूँ.....।

श्रीमान मोहन लाल (गंगानगर से भेजा): महोत्सव की सभाओं में अपनी तरफ ध्यान गया (जहाँ कई बुराईयों से पहले बचाव भी हुआ है) नशे की एक लत जर्दा खाने की अभी तक दूर नहीं हैं अब मैं प्रण करता हूँ कि ऐसी कोई बुराई रहने नहीं दूँगा, मैंने इसके लिए बहुत कड़े/सम्मानीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी से भी झूठ बोल दिया था कि यह नशा मैं छोड़ चुका हूँ. .. इसके लिए शर्मिंदा हूँ, पश्चताप करता हूँ। सभाओं में आकर प्रेरणाएँ मिलती है.....

मैं गुरू का सेवक भी नही बना हालांकि देव समाज की सभाओं से बहुत अर्से से लिंक है, यह बात भी दुःख दे रही है, अब मैं अपनी इस लत से निकलकर सेवक भी बनूँगा। सभाओं में ज्यादा योग्य देने की कोशिश करूँगा।

कुछ धर्म सम्बन्धियों ने महोत्सव के विशेष मण्डल का ब्यान करते हुए बताया, कि उन्हें बहुत लाभ हुआ है। एक धर्म सम्बन्धी ने कहा कि मुझे तो ऐसा लगा है कि ऐसा शानदार वातावरण सब महोत्सवों से बढ़कर प्रभावदायक रहा।

खाने के प्रबन्ध की तो सबने ही बहुत सराहना की। सभा के बाद सब धर्म सम्बन्धियों का जिन्होंने इस महोत्सव से कामयाब बनाने के लिए तन, मन और धन से सहायता की, उनका सभापति जी ने और मिसिज सुरजीत बराड़ जी ने तहदिल से धन्यवाद किया। देव आरती का गान और जय प्रवनि के साथ यह प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

उसके बाद बहुत से धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर सब समान एक खुले कमरे में बहुत तीरतीब से रखा, जब समान निकाला था कितनी दरीयां और कपड़े खराब हो गए थे। शीशे कुछ टूटे हुए थे, वह भी लगवाए गए।

धर्म जीवन

खण्ड 33 अंक 1
जनवरी – 2022
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 171 वां पावन जन्म महोत्सव

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 171 वां पावन महोत्सव डेराबस्सी के पास स्थित देव आश्रम में बहुत धूम धाम से मनाया गया। करोना के कारण पिछले वर्ष धर्म सम्बन्धी इक्ट्ठे नहीं हो सके थे, इसलिए वह इस महोत्सव पर आने और साथ ही माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के दर्शन करने के लिए बहुत उत्सुक थे। कई धर्म सम्बन्धियों के फोन आते रहते थे कि हम श्रीमान जी के दर्शन करना चाहते हैं।

महोत्सव से पहले सारे आश्रम में जहां जहां आवश्यकता थी, वहां वहां पेंट आदि श्रीमान सुखदेव जी लंडन की सहायता के द्वारा कराया गया। श्रीमति सुरजीत जी बराड़ ने सजावट, हाल में कुर्सियों, मेजों, रोशनी, माईक, बैंड, हारों आदि का महोत्सव से कुछ दिन पहले प्रबन्ध कर लिया था। लंगर के लिए डाक्टर नवजोत जी ने संगरूर से ही प्रबन्ध कर लिया था। 16 दिसम्बर को 3 धर्म सम्बन्धी श्रीमान सुखदेव जी और जसविन्द्र सिंह जी केसूपुरा से, गौतम जी गोनियाना से पहुँच गए थे। माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी देर शाम तक पहुँच गए थे। श्रीमान जलधर जी अपनी duty के बाद 2 दिन 2 बजे पहुँच जाते थे और बहुत सेवाकारी होते रहे। दोपहर को आने वाले धर्म सम्बन्धियों ने आते ही चारपाईयां लगानी आरम्भ कर दी, सारे कमरों में चारपाईयां लगा दी गई। श्रीमान जी के ड्राईवर शम्भू जी ने सारा राशन जो चमन जी और निशा जी ने ले लिया था, वह पहुँचा दिया था और वायदा भी किया था कि सारा काम वह सम्भालेंगे। वह चार परिवार के मैंबर थे। 2 वर्ष के बाद उन्होंने सभाएं सुननी थी, किसी अनजाने कारण से उन्हें महोत्सव और सेवा का काम छोड़कर जाना पड़ा, वह कितने लाभ से वंचित हो गए, उन्हें अन्दाजा भी नहीं हो सकता। परन्तु, कई मजबूरियां इन्सान को बेबस कर देती हैं। श्रीमान अग्रवाल जी का लखनऊ से फोन आया कि मुझे तो बताया गया है कि इस साल महोत्सव नहीं हो रहा, वह भी इस ग़लत Information से नहीं आ सके।

2 – 3 और धर्म सम्बन्धी इसी तरह इस लाभ से वंचित रहे। चमन जी के जाने के बाद ही उपरोक्त धर्म सम्बन्धी तुरन्त सेवा के लिए पधार गए।

17 दिसम्बर को जिस प्रकार धर्म सम्बन्धियों ने भाग भाग कर बिस्तरे लगाए, झण्डे लगाए, हाल में बिछाई की, वह बहुत सुन्दर नज़ारा था। सजावट, बिजली और अन्य समान वालों ने अपना काम शुरु कर दिया, दोपहर का खाना सुरजीत जी सबका ले जाती थी। Break-fast और शाम का खाना वह अपने पैंसों से खाते थे। समाज पर कोई बोझ नहीं डाला। उन्हें नहाने के लिए 17 तारीख़ को गर्म पानी नहीं मिला, उन्होंने परवाह नहीं की। माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी पूरे जोश से अपनी उमर की परवाह न करते हुए जुटे रहे। श्रीमान सुखदेव जी के घुटने में दर्द था। जसविन्द्र सिंह जी को पीठ में तकलीफ हो गई, पर उन्होंने आराम नहीं किया। 17 की रात तक सब काम ख़त्म हो गए थे, हाल में बिछाई आदि हो चुकी थी। हाल पूरी तरह सज चुका था। बाहर की सफाई, गमले बहुत सुन्दर लग रहे थे। स्टेज पर और नीचे फूल बहुत सुन्दर लग रहे थे।

18 तारीख़ की सुबह से ही यात्री आने शुरू हो गए थे और माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी उनके रहने का प्रबन्ध कर रहे थे। 12 बजे तक डाक्टर नवजोत जी अपनी पार्टी के साथ पहुँच गए। 2 बजे तक दोपहर का खाना तैयार हो गया था। जो 2 धर्म सम्बन्धी आते गए खाना खाते गए। सब तैयारियां देखकर धर्म सम्बन्धी धन्य धन्य हो रहे थे। 4.30 बजे प्रवेश सभा का समय था। माननीय श्रीमान यशपाल जी के सुपुत्र श्रीमान पियूश जी भल्ला के भजनों को Mike पर लगाया गया और जिस सुन्दर सुरताल से वह भजन गाए गए थे, पहले ही भजन ने सबके दिलों को प्रभावित कर दिया। पहली सभा में माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इच्छा ज़ाहिर की कि हमें सभाएं record करनी चाहिए, तो भल्ला साहिब ने अगली सभा में ही recording का प्रबन्ध कर दिया और प्रतिदिन समय पर आकर recording होती रही और उसकी सारी payment भी भल्ला साहिब ने ही की।

गर्म पानी करने का प्रबन्ध किया, जिसकी डियूटी श्रीमान बूटा सिंह जी और साथी करते रहे। इस प्रकार बहुत से धर्म सम्बन्धियों और सहायकारियों की असीम सहायता से हम महोत्सव को बहुत सफलतापूर्वक मनाने के योग्य हो सके। सब का बहुत 2 धन्यवाद करते हुए परम पूजनीय भगवान को तहदिल से धन्य धन्य कहते हैं, जिनकी अपार कृपा से सभाओं का मण्डल इतना प्रभावशाली बना।

<u>प्रवेश सभा, शनिवार, 18 दिसम्बर 2021, शाम 4.30 बजे :</u> सभापति : श्रीमान गौतम जी।

सबसे पहले "हमारे पुजनीय सतगुरू जी, तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" नामक भजन का गान किया गया। फिर देव स्त्रोत का गान और गौतम जी ने बहुत गहरे भावों से विस्तारपूर्वक देव स्त्रोत की व्याख्या की। फिर एक भजन का

गान हुआ, फिर सभापति जी ने गुरू के दरबार में सहाय प्रर्थना की "खुशनसीबी से यहां आना हमारा हो गया, ज़िन्दगी का भेद सारा आशकारा हो गया" नामक भजन का गान किया गया।

फिर सभापति जी ने सब को गुरू महाराज के जन्म की मुबारकबाद दी और बताया कि बाहर दुनिया में बहुत उत्सव, महोत्सव मनाए जाते हैं, लाखों लोग इक्ट्ठे होते हैं, परन्तु इस महा उत्सव की विशेषता गुरू महाराज के देव जीवन और उनके देव प्रभावों से है, जिनसे हमारे जीवनों में शुभ परिवर्तन आता है। इन प्रभावों में उत्सुकता से आने वाले सब धर्म सम्बन्धियों का मैं दिली भावों से स्वागत करता हूं। फिर उन्होंने कुछ उच्च परिवर्तनों का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन किया। श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी और श्री डाक्टर साहिब जी की घटनाओं को विशेष रूप से विस्तारपूर्वक बताया। सन् 1925 में परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी ने जो प्रवेश सभा करवाई थी, उसके कुछ अंशों का पाठ किया। और भी गुरू महाराज की बहुत सुन्दर देव वाणी पढ़कर सुनाई ओर उसकी व्याख़्या की।

महोत्सव से लाभ उठाने के लिए अपने दिलों की अवस्था को कैसे अधिकारी बनाया जाए, उसका वर्णन किया। उन्होंने बहुत सुन्दर शब्द कहे कि देव प्रभावों से हमारे भीतर नीच जीवन से निकलने और उच्च भावों को पैदा करने के लिए खलबली मचनी चाहिए, तभी हमारे भीतर उच्च परिवर्तन आ सकता है।

गौतम जी बहुत उत्साही, उच्च शिक्षित और बहुत अध्ययन-शील और दीन नौजवान है। अपने घर में साधन मन्दिर बनाया हुआ है। रविवार की सभा करते हैं। गहरे दिल से गुरू से जुड़ने के संग्राम में जुटे रहते हैं। महोत्सव का दान, चन्दा आदि का सारा काम उन्होंने बखूबी सम्भाला।

उसके बाद माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यात्रियों का स्वागत किया, चन्द शब्द इस महा उत्सव की विशेषता में कहे और प्रार्थना की कि यहां का वातावरण पवित्र रखने के लिए निन्दा, चुगली और फज़ूल की बातचीत न करें, अपने समय को उपयोगी बनाने का प्रयत्न करें, जूते आदि तरतीब से रखें, पीली पगड़ी सेवक अवश्य पहन कर आएं। समय पर सभाओं में आएं तो आप सबकी बड़ी कृपा होगी। कुछ ज़रूरी सूचनाएं और डियूटीज़ बताई और अगले दिन का प्रोग्राम बताया।

आख़िर में माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने भावों का प्रकाश किया और कहा कि हाल को देखकर, सारी रोशनी और तैयारियों को देखकर मुझे हृदयगत आनन्द प्राप्त हुआ है, मैं इसमें सेवाकारी होने वालों का धन्यवाद करता हूँ और यहाँ पहुँचने वाले धर्म सम्बन्धियों का स्वागत करता हूँ। फिर उन्होंने बताया कि कहीं मिर्चे कूटते हों तो हम कैसे प्रभावित होते हैं, उसी प्रकार यहाँ के प्रभाव हम सबको प्रभावित करेंगे, क्योंकि यह देव प्रभाव हमारे जीवनों को

बदल देते हैं। उनका ब्यान बहुत भाव पूर्ण था।

19 दिसम्बर, 2021, रविवार :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। विषय : भगवान देवात्मा का परम आवश्यक सम्बन्ध। यह विषय बहुत उच्चस्तर का है इसके लिए बहुत उच्च योग्यता की आवश्यकता है जिसका मेरे अन्दर अभाव है। हमारा अस्तित्व शरीर और आत्मा से संयुक्त है नेचर में हमारे अनेक जीवनदायक सम्बन्धी हैं। हवा (आक्सीज़न) और जीवनधारियों की न्याई हमारा मनुष्यात्माओं का भी परमआवश्यक सम्बन्धी है। जबरदस्त बेहोशी में भी आक्सीजन की विशेष उपकरणों द्वारा सहायता दी जाती है। इसी तरह पानी भी हमारा परमआवश्यक जीवन देने वाला सम्बन्धी है। सूर्य की गरमी और रोशनी भी हर किस्म के जीवन के लिए परम आवश्यक है। थोड़ा और विचार करें तो पोष्टिक खुराक/भोजन भी हमारा जीवन दायक सम्बन्धी है। मनुष्य केवल शरीर नहीं है। मनुष्य जीवन के अनेक रूप हैं। हम सामाजिक प्राणी हैं। मनुष्य को सामाजिक गुणों के विकास की आवश्यकता है। मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान पाने की अत्यन्त ज़रूरत है। मनुष्य को अपने परिचालक भावों को जानने की भी अत्यन्त ज़रूरत है। हमारे परिचालक भाव सुख अनुराग और घृणा भाव हैं। उनका हमारे अस्तित्त्व पर क्या प्रभाव पड़ता है? हमारे जीवन में शरीर मुख्य है या इसकी जीवनी शक्ति, इसका ज्ञान और बोध केवल मात्र सच्चे आत्मिक उच्च वातावरण और उसके प्रभावों से होता है। शरीर मुख्य है या इस में वास करने वाली शक्ति (आत्मा) यह केवल मात्र परम पूजनीय भगवान आत्मा द्वारा प्रदान किए विशेष वातावरण में संभव है।

हमारे आत्मा का बल भी शारीरिक बल की तरह बढ़ता या घटता रहता है जैसी जैसी गतियां हम अपने भावों के द्वारा करते हैं। आत्मा हर समय बदलता रहता है क्योंकि हम भी नेचर के अंशों की तरह नेचर के अटल नियमों के अधीन हैं। नेचर का कोई भी अस्तित्त्व इन नियमों से अनजान नहीं है। हमारे परम पूजनीय भगवान की ज्योति में हमें अपने व्यवहारों के बारे में ज्योति मिलती है। नीच भावों ने हमारे अपने और सामजिक जीवन का क्या हाल बना दिया है? सभापति जी ने दाता जी के पहले जीवन में परिवर्तन लाने की और पूजनीय भगवान के प्रदान किये वातावरण से उनके परोपकारी जीवन की सुन्दर प्रभावशाली तस्वीर पेश की।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के उच्च प्रचारकों की विशेष कृपा और संग्राम से कैसे सभापति जी को निकाला गया, विनाशकारी गतियों से निकालकर एक सभ्य जीवन दिया इसका इन्होंने हृदय के भावों के साथ वर्णन किया।

मनुष्य जीवन में स्वार्थ और अहं भाव इसके महा शत्रु हैं जो जीवन का सर्वनाश करते हैं। परम पूजनीय भगवान का सम्बन्ध इन शत्रुओं से रक्षा कैसे करता हैं? यह बताया अधिक अधिकारी महान आत्माओं के त्यागों और संग्रामों

का ब्यान और श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के महान पक्षों का ब्यान करते हुए बताया कि वह भगवान का अमृत पान करके कैसे महान परोपकारी और निर्भय बन गए थे। फरमाया करते थे हम तैयार बैठे है हमें मौत की कोई प्रवाह नहीं है।

परम पूजनीय भगवान के समबन्ध से आत्मा कितने शुद्ध और निर्मल हो जाते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी श्रीमान धर्म बल जी के महान दृष्टांत हैं। काश! हम इस अत्यन्त आवश्यक सम्बन्ध की महिमा को समझ सकें, और इस सम्बन्ध की और सम्बन्धों से जितनी उत्तमता है उसे समझ सकें।

इस सम्बन्ध को जिन थोड़े से महान कर्मचारियों पूजनीय भगवान के सेवकों ने समझा है उन्होंने उच्च जीवन पाया है। काश! हम कुछ न कुछ परम पूजनीय भगवान के परम आवश्यक सम्बन्ध को जान सकें। मेरी ऐसी कामना अपने लिए है, और आप सब के लिए है।

<u>रविवार, 19 दिसम्बर, 2021, शाम 4.00 बजे :- सभापति मिसिज सुरजीत बराड़। विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने हमें क्या से क्या बना दिया।</u>

पहले महिमा विषयक भजन का गान किया गया- फिर एक भजन का गान हुआ। "श्री देवगुरू भगवान ने हमें क्या से क्या है बना दिया, अपने देव अमृत कुण्ड से, हमें एक घूंट पिला दिया"

फिर सभापति जी ने कहा कि मैं केवल इस विषय को Introduce करूंगी, फिर दो धर्म सम्बन्धी ब्यान करेंगे कि भगवान के देव प्रभावों ने उन्हें क्या से क्या बनाया है।

सभापति जी ने बताया कि भजन में आता है कि देवगुरू ने हमें देव अमृत का घूंट पिला कर हमारी काया कल्प की है, परन्तु मैं महसूस करती हूं कि एक घूंट अगर हमने पी होती तो हमारे जीवन कुछ और बोलते, हमारे ऊपर देव अमृत के कुछ छींटे पड़े हैं, जिनसे ही हम वह नहीं रहे, कुछ और बन गए हैं।

मैं महसूस करती हूं कि यदि मेरे पड़दादा जी के कहने पर पिता जी के पास श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह, श्रीमान हरनाम सिंह जी मल्लेका और पंडित नेत राम जी न जाते तो जैसे डाक्टरी की प्रैक्टिस में उनके पास बहुत आमदन हो गई थी और वैसे ही सरदार दोस्तों के साथ महफिलें जमने लगी थी। हम तीन बहने थी, उन पर यार दोस्त ज़ोर डालते थे कि वह दूसरी शादी कर लें तुम्हारे लड़का होना चाहिए। यदि गुरू का दर न मिलता तो आज मैं यहां तो क्या बैठना था, किसी शराबी, कबाबी के पल्ले बांध दी जाती, जो दुर्दशा मेरी निकटी रिश्तेदार लड़कियों की हुई, वही हम बहनों की होती। पिता जी का विशेष श्रद्धावान दिल था, एक ही सत्संग से उनको इतना आकर्षण हुआ कि कर्मचारियों को बार 2 आने के लिए प्रार्थना की, बड़े-2 सत्संग रखवाए 200-200 आदमी सभाएं सुनने लगे, कितनों के पाप छोड़े, कितनों के सम्बन्धों में बेहतरी आई। उनके भीतर इतनी तड़प थी कि मैं बचा

हूं, औरों को बचाऊं। मेरे परिवार को गुरू महाराज ने कहां से कहां पहुंचा दिया, इसका मैं ही अनुमान लगा सकती हूं। (मेरी अनपढ़ मां ने विकासालय की परीक्षा पास की, उन्होंने एक लेख लिखवाया, "शरण तुमरी न आती तो मैं क्या होती, कहां होती।")

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव अमृत ने सचमुच ही अनपढ़ों को इस योग्य बनाया। श्रीमान बुद्ध सिंह जी ने एक पत्र में लिखा है कि मैं अपने व्यवहारों से सबको दुखी करता था, उनको दुखी देखकर खुश होता था। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आकर वह अनपढ़ सेवक ने ऐसा पब्लिक लैक्चर दिया, कि लोग पूछने लगे कि क्या यह पी.एच.डी. हैं, एक अनपढ़ को गुरू महाराज ने क्या से क्या बना दिया।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने हमें मिथ्या और पापों से बचाकर हमारे जीवनों को नई दिशा दी है। केवल मोटे पापों से बचाया ही नहीं, बल्कि एक 2 प्रतिज्ञा को कितनी बारीकी से एक 2 जीवन में ढाला है, यह क्रिश्मा माननीय श्रीमान मनोहर लाल जी के जीवन में हमने आँखों से देखा है, वह अपनी दुकान में सौदा देते समय कम तोलना, ज़्यादा पैसे लेना और तरह - 2 की बेईमानियां करते थे, धन के अनुराग के वशीभूत होकर लड़ाई झगड़े करते थे, उन्हें इतना ईमानदार बना दिया कि किसी के साबुन भी कतरन से हाथ धो बैठे उसके परिशोध के तौर पर पैसे जमा करवाए, विकासालय की रसोई के चूल्हे की जलती हुई आँच पर छेव के लिए कटोरी में पानी गर्म करते थे, तो उसके पैसे जमा करवाते थे, किसी से कोई चीज़ मंगवाते तो पहले उसके हाथ में पैसे रखते, फिर चीज़ को हाथ लगाते, किसी से कोई चीज़ मुफ्त में लेने की तो वह सोच भी नहीं सकते थे। परम पूजनीय भगवान देवात्मा चाहते हैं कि उनके सेवक ईमानदारी के लिहाज़ से कभी किसी शक के दायरे में भी नहीं रहने चाहिए। लोग यह आशा करते हैं कि देव समाज का मैंबर बेईमान नहीं हो सकता।

हमें विज्ञानमूलक शिक्षा देकर गुरू ने हमारे दिमाग़ के जाले साफ कर दिए हैं। आत्मा और उसके विषय में ज्ञान दुनियां में कहीं नहीं मिल सकता।

"उजड़े हुए बसा दिए" भजन की यह सतरें गाते ही मेरे सामने मोगे के अवतार सिंह बराड़ का परिवार खड़ा हो जाता है, अपने सामने एक तस्वीर बनाएं कि बच्चा बिमार है, पत्नी दवा के लिए पैसे देती है, परन्तु पति शराब पीकर मस्त हो जाता है और बच्चा मर जाता है, साथियो यह कहानियां हम सुनते है, परन्तु यदि उसकी तस्वीर बनाएं तो गुरू के प्रभावों के क्रिश्मों को अनुभव कर सकते हैं।

यह तस्वीर बनाओ कि कितने गाँवों का मालिक, राजों, महाराजों का रिश्तेदार एक गरीब, मजलूम, अनुसूचित जाति के एक जन के पास दूसरे गाँव में जाता है, और उससे क्षमा की भीख़ माँगता है, उसके चुप होने पर यहाँ तक कहता

है कि तुम मुझे उसी तरह मारो जैसे मैंने तुम्हें मारा था परन्तु मुझे क्षमा कर दो। धन्य हैं सत्गुरू, उनके प्रभाव जो अहंकारियों को अपमान कृर्ताओं को इस क़दर दीन बना देते हैं नहीं तो अहं अनुरागी मनुष्य बड़े से बड़े उपकारी का भी अपमान कर बैठता है।

गुरू महाराज ने सम्बन्धों में स्वर्ग पैदा किया है, गुरू महाराज के देव अमृत को जिस जिस ने जितना 2 ग्रहण किया है, उनके जीवन कुछ के कुछ बन गए हैं, यह हमारे पर निर्भर है कि हम कितने ग्रहण करते हैं।

माननीय श्रीमान साधू जानकी दास जी ने अपने पत्र में लिखा है कि भगवान का काम करते 2 ही मैं इतना अहंकारी बन गया था, बड़े छोटे सब का अपमान करता था, धीरे 2 गुरू के प्रभाव बन्द हो गए और मैं सोचने लगा कि मैं इन लोगों के साथ काम ही नहीं कर सकता, मैं अलग रहकर यही काम करूंगा, परन्तु कुछ देर में ही होश आ गई कि इन प्रभावों से कटकर मेरी क्या हैसियत! और वह वापिस आ गए। इस देव प्रभाव रूपी अमृत को कुछ न कुछ सत्संग वा साहित्य के पाठ से हम प्राप्त कर सकते है। इसके बाद सभापति जी ने श्रीमान सुखदेव जी को अपने भाव प्रगट करने के लिए निमन्त्रित किया।

<u>श्रीमान सुखदेव जी केसूपुरा :–</u> मेरे विशेष सन्मान के योग्य "श्रीमान बलदेव सिंह जी" सभापति जी व सभी सेवको, सबको सत्यदेव जी की जय कहता हूँ।

देवगुरू भगवान की पवित्र शरण में आकर मेरे भीतर जो मोटा – 2 परिवर्तन आया है उसकी कुछ चन्द घटनाएं ब्यान करता हूँ और जो गुरू के दर से नायाब बरकतें गुरू की कृपा से उपलब्ध की हैं उन सबका अपनी तुच्छ योग्यता के अनुसार ब्यान करने की कोशिश करता हूँ।

मुझ नाचीज को सन् 1993 में विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी की अपार कृपा से "पूजनीय भगवान् देवात्मा" की पवित्र शरण में सेवकी का अधिकार ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ।

यह महा सौभाग्य पाते समय मुझे देव समाज का कुछ भी ज्ञान प्राप्त न था। उससे पहले एक दो सभाओं में ही मैं शामिल हुआ था। मल्लेका में श्रीमान मेहर सिंह जी के द्वारा सभाएँ होती थी।

(1) मैं और मेरे बड़े भाई श्रीमान अजीत सिंह जी अखण्ड पाठ की समाप्ति के बाद कभी – 2 स्टेज़ पर गाया करते थे। वहां पर सन्मान के योग्य हमारे उपकारी श्रीमान मेहर सिंह जी आकर श्रीमान अजीत सिंह जी को कहते थे कि आप लाउडस्पीकर में सभी को सूचना दे दो कि आज शाम को हमारे घर में सभा का प्रोग्राम है।

(2) मैंने तो बस एक दो सभाऐं ही सुनी थी। अचानक हमारा गुरू महाराज के जन्मोत्सव पर चण्डीगढ़ में आने का प्रोग्राम बन गया।

(3) चण्डीगढ़ में सभाऐं बहुत अच्छी हुई। मुझे यह सब बातें नई 2 और अच्छी लगने लगी। मैं पहली बार ही चण्डीगढ़ आया था। मुझे यहाँ

आकर सच बात यह है कि एक बार भी याद नहीं आया कि हम घर से बाहर आए हुए हैं। आखिरी के दिन मुझे और श्रीमान मेरे भाई अजीत सिंह जी को पूछा कि आप नए सेवक बनेगें, हम भी दोनों भाई सेवक बन जाएं। मेरे को न कुछ समझ थी न पता था कि सेवक क्या होता है और कैसे बनते हैं। मैं अचानक ही बिना सोचे बोल पड़ा कि "नेक काम पूछ 2 कर नहीं किया करते"।

(4) इस तरह हम भगवान देवात्मा की निराली और सबसे आला उच्च संगत के पहली श्रेणी के सेवक बन गए। और हम सभाऐं समाप्त होने के बाद जब व्यक्त घर आ गए तो ऐसा लगने लगा कि जैसे हम किसी और ही नए लोक से होकर आए हैं। गाँव आकर सारा कुछ ही नया - 2 लगने लगा। हमारे बोल चाल, रहन सहन के तरीके बदलने लगे। मैं उस वक्त इलैक्ट्रिशन का काम करता था और साथ में आटा चक्की भी लगा ली थी। मैं लोगों को दुकान पर आने वालों को बैठा 2 कर देव समाज की नई शिक्षा के बारे में समझाता। हर वक्त हमारी दुकान पर देव समाज की ही शिक्षा की चर्चा होती रहती थी। शिक्षा का पूरा और ज्यादा ज्ञान न होने के कारण कई जन उलझ जाते और बहस करने लग जाते।

(5) धीरे - धीरे मेरे जीवन में कई तरह के परिवर्तन आने शुरू हुए। मेरी सोच तर्क की सोच होने लगी। मैं देव समाज की छोटी - 2 किताबें पढ़ने लग गया जो मैं सेवक बनने के बाद चण्डीगढ़ से लेकर आया था। मैं लोगों की मिथ्या वाली बातों को काटकर गुरू की शिक्षा के अनुसार उत्तर देने लग गया। मैं लोगों को इसी बात पर ही घेर लेता कि हम देव समाजी ये आठ मोटे - 2 पाप नहीं करते। लेकिन आप इनमें से कई एक पाप करते हो। और उनको पाप भी नहीं समझते बल्कि पुण्य का काम समझते हो। फिर वह बहस करते - 2 ढ़ीले पड़ जाते और चुप हो कर बैठ जाते। इससे मेरा घमण्ड का भाव और बढ़ जाता। इस वक्त मेरे को इस भाव का भी कुछ पता न था। धीरे 2 मेरे भीतर के ऐसे नीच भाव बढ़ते गए कि जिन का उस वक्त मैंने कभी नाम भी नहीं सुना था। ऐसे में भावों का उच्च होना या नीच होना तो बात बहुत दूर की बात थी। उस समय तक मैंने अपने कानों से उपकार या उपकारी का शब्द कभी नहीं सुना था। इसलिए उपकारियों की शक्ल भी मेरे सामने नहीं आ सकती थी और न ही वह आई।

(6) जैसा कि मैं पहले ब्यान कर चुका हूँ कि देवात्मा के दर पर आने से पहले मैं कहलाने को एक धार्मिक पाठी था। लोग बहुत इज़्जत मान करते थे। दूर - दूर के इलाकों में पाठ करने के लिए जाया करता था। लोग हमारी आवाज़ सुनकर बहुत प्रशंसा किया करते थे। जब लोगों के गुरूबाणी सुनने का समय होता था तो समय विचार कर मुझे डयूटी मिला करती थी।

इसमें भी कोई सन्देह नहीं था कि "गल्लीं असीं चंगिआं अचारीं बुरीयां। मनंहु कुसुडां कालीयां बाहरों चिटवीयां। वाली गुरूबाणी की सतरें मुझे पर बहुत फिट बैठती थी।

(7) हमारे गुरूद्वारे के ग्रन्थी साहब मीट शराब

के पूर्ण आदी थे। धीरे - 2 मैं भी मांस शराब खाने लग गया। उधर मेरे ससुराल के लोग भी शराब बहुत पीते थे। फिर मेरे लिए और भी आसान हो गया।

(8) एक बार मैं और मेरे दो साथी रात को सिरसा से शराब पीकर वापिस घर आ रहे थे। रास्ते में मेरे ससुराल के घर चले गए और ससुरालवालों को मुर्गा बनाने के लिए कहा। हम वापिस वहां से चल पड़े हमें कुछ नहीं पता लगा कि हमारी यहां क्या शक्ल बन रही है।

(9) एक हम चार पाठी जिनमें हमारे ग्रन्थी साहब भी शामिल थे किसी गाँव से अखण्ड पाठ करके वापिस लौट रहे थे तो हमने सभी ने मिलकर मशवरा बनाया कि आज फलां पाठी के घर मुर्गा बनाया जाये। मुर्गा मिल नहीं रहा था। मैं तो वापिस घर आ गया लेकिन वह मुर्गा बनाकर खाकर अन्धेरे में घर लौटे।

(10) एक बार मैं घर में मकान बना रहा था। जब उस मकान की छत लग गई तो मिस्त्री कहने लगा कि आज पार्टी कर लें। उसके कहने पर मैंने किसी से एक मुर्गा मंगवाया। आखिर मैंने उसे एक पशुओं वाले कमरे में ले जाकर काट दिया। उसकी वह छोटी 2 सुन्दर आँखे आज तक भी मेरे सामने आ रही हैं। वह कटा - कटाया मुर्गा शायद वह मिस्त्री अपने घर ले गया था।

11) गुरू की शरण में आने के बाद यह सब घटनाऐं एक - एक करके बारी - बारी से एक फिल्म की तरह मेरे सामने आ रही हैं। इन सब घटनाओं को याद कर - करके दिल डूबने लगता है। अगर ऐसे महान गुरू की शरण न प्राप्त होती तो पता नहीं अब तक कितने जीवों का कत्ल करके अपने जीवन का नाश करना था। अब श्रीमान जी की अनथक मेहनत से और गुरू की मुझ नीच पर अपार कृपा से हानिपरिशोध के भाव से लगभग कई सालों से जानवरों को दाने डालने का और पानी भर कर रखने का साधन जारी है। इन पापों से बचाने के लिए लोगों में भी गुरू कृपा से प्रयास करता हूँ।

(12) श्रद्धा और सन्मान के योग्य मेरे विशेष उपकारी, हितकारी और रक्षक श्रीमान बलदेव सिंह जी बार - 2 हमारे गाँव में आकर सभाऐं करवाते और उन सभाओं को सुनते - 2 हम कुछ नए शब्द सीखते गए। श्रीमान जी की कृपा से गुरू के प्रभाव मेरे हृदय में मेरी तुच्छ योग्यता के अनुसार घुसने लगे। मुझे मेरे उपकारी कुछ 2 नज़र आने लगे। सम्बन्धों में कुछ अनमेल कम होने लगा।

(13) परम पूजनीय भगवान की शरण में आने से पहले पत्नी के साथ नारकीय सम्बन्ध था। पत्नी पर थानेदारी करता था। छोटी 2 बात पर पत्नी को पीटता था। एक बार तो मैंने पत्नी को डण्डे से भी पीटा था। छोटी 2 बात पर पत्नी का अपमान करता था। इस देवी ने जितनी मेरी सेवा की है उसका पूरा 2 ब्यान करना मुश्किल है। जब मैं घर से अलग हुआ था तो हमारे आर्थिक हालत इतने अच्छे नहीं थे। मैंने पशु रख कर डेयरी में दूध बेचना शुरू किया था। घर से मेरे हिस्से में शायद एक ही भैंस आई थी। फिर मैं

आर्थिक तौर पर कमज़ोर सा गया कि और भैंस खरीद कर ले आता और मेरी पत्नी भैंस की सेवा कर कुछ ही महीनों में उसे खूब मोटा ताज़ा कर दिया करती। हम लगभग साल दो साल उसका दूध बेचते और फिर काफी महंगे मोल पर बेच कर वैसी ही पहले जैसी कोई और सस्ते दामों में खरीद लेते। मैं सारा दिन इलैक्ट्रिशयन का काम करता और बीच - 2 में अखण्ड पाठ भी करता था। मैं अन्धेरे - अन्धेरे में एक पराली की गाड़ी और हरा चारा खेत से चोरी ले आता और फिर अपना मोटरों का काम करने लग जाता। मेरी श्रीमति जी उस पराली को आधी - 2 रात तक कुतरती और फिर सारा दिन पशुओं की सेवा में रहकर 10 - 10 से 20 - 20 किलो दूध बेचती थी। फिजूल खर्ची बिल्कुल नहीं करती थी। मैंने उन दिनों में उसे कोई नया कपड़ा नहीं लेकर दिया। जब मायके जाना होता तो बच्चों को साथ लेकर सात - आठ किलोमीटर तक पैदल ही जाती और शाम को वापिस पशुओं की डयूटी पर आ जाती। ऐसी देवी जैसी पत्नी का मैंने बहुत अपमान किया है अनादर किया है। श्रीमान जी की सभाऐं सुन - सुन कर पता लगा है कि पत्नी में भी जान है। इसकी भी इज्ज़त है। इन पर मैंने जो जुल्म किए हैं, जो पाप किए हैं उनके लिए मैं गुरू की रोशनी में कई बार क्षमा माँगी है। कई बार रो - 2 कर भी माफ़ी माँगी है। अब गुरू की कृपा से हमारा नारकीय सम्बन्ध स्वर्गीय सम्बन्ध हो गया है। हम एक दूसरे से कभी ऊँची आवाज़ में नहीं बोलते। एक दूसरे का सन्मान करते हैं।

(14) गुरू की संगत में आकर माता का रूप नज़र आया है। जब हम छोटे थे तो माता ने किस तरह रात दिन कड़कती धूप, सर्दी में काम करके हमें पाला है। लोगों के घर से उधारी फीसें मांग कर हमें पढ़ाया है। बीस - 2 पशुओं का गोबर उठाया है। मेरी माता जी ने हमें साथ मिलाकर प्याज गाड़ी पर लाद कर गाड़ी ऊपर तक भर ली जब हम घर पर आ गए तो बैलों ने अचानक गाड़ी नीचे गिरा दी और माता जी का पाँव उसके नीचे आ कर पिस गया। लेकिन माता जी ने इस तकलीफ़ में सारे प्याज गाड़ी से उतारे, सारा काम निपटा कर उस पाँव पर गर्म - गर्म रोटी बाँध कर कई दिनों में उस पांव को ठीक कर लिया।

मेरी माता जी खाना बहुत स्वादिष्ट बनाती थी। हमारे अध्यापक उस वक्त बारी - 2 से बच्चों के घर से ही खाना मंगवाते थे। मुझे लगता था कि माता खाना सुन्दर कपड़े से ढक कर नहीं देती मेरी बेइज्ज़ती हो जाएगी। लेकिन अब पता चलता है कि माता के पवित्र हाथों में क्या 2 बरकतें थी।

(17) गुरू के दर पर आकर मेरा अपनी बहनों के साथ बहुत सुन्दर और हितकर सम्बन्ध हुआ है। भाई - भग्नि यज्ञ के दिनों में सम्बन्ध बोध को पढ़कर मेरा सम्बन्ध दोनों बहनों से स्वर्गीय सम्बन्ध स्थापित हुआ हैं। एक बहन ने बड़े संग्राम से दांत लगवाए और दूसरी की आँख बनवाई। दोनों की मेरी पत्नी ने बहुत सेवा की। मैं जो स्वार्थी वजूद पाई - 2 पर मरने वाला था, मेरे सत्गुरू ने मुझ से सेवा का काम निकाल लिया है उस सबके लिए

मैं परम् पूज़नीय भगवान देवात्मा को जितना भी धन्य - 2 कहूँ थोड़ा है।

(18) एक बार मैं और मेरा नौकर रात को ट्राली ट्रैक्टर लेकर गए। हमारे खेत के सामने नहर के किनारे एक सूखा कीकर का पेड़ खड़ा था। उस पेड़ को काट कर ट्राली में गिरा कर ले आए। उसे धान में आकर छुपा दिया। जब जंगलात महकमें वाले ढूढ़ते - 2 हमारे घर आए तो उनको वहाँ कुछ न मिला और वह चले गए। कुछ दिनों बाद मैंने उसके बाले चिरवाकर एक मकान की छत बनवा ली। यह घटना बहुत पुरानी है। मेरे गुरू की कृपा से मैंने उसके पिरशोध के लिए जिसकी कीमत उस वक्त लगभग 1000 रू के करीब थी। मैंने उसके इवज़ में 2000 रुपये देकर परिशोध किया है।

(19) सन् 1983 में मेरी मोटरों की दुकान पर एक मज़दूर साईकल खड़ी कर गया था। उसकी घण्टी पीतल की थी जो बहुत सुन्दर आवाज़ निकालती थी। मैंने बेईमानी से वह घण्टी उतारकर अपने साईकल को लगा ली और अपने साईकल की घण्टी उसके साईकल में लगा दी। जब वह शाम को वापिस साईकिल लेने आया तो उसने देख लिया। मैंने शर्म में आकर उसकी घण्टी उसके साईकल को लगा दी। चार - पाँच गुना अपने आप पर जुर्माना लगाकर दान में दे दिया हैं। क्योंकि वह जन अब इस दुनियां में नहीं है।

(20) एक बार मैंने एक दुकानदार से एक जमींदार के साथ बैरिंग खरीदे थे। उस दुकानदार ने उनमें से थोड़ा सा कमिशन (रिश्वत) दिया था। जो अब गुरू की कृपा से मैं उसके बदले में 500/- रूपये का परिशोध कर चुका हूँ।

(21) एक दुकानदार से मैं दुकान के लिए सामान लेता था। मैंने लगभग 20000 रुपये का सामान उससे लिया। उस दुकानदार ने 5900 रुपये उसमें नहीं जोड़े थे। गुरू की कृपा से मैंने उसके वह रुपए वापिस दिए और गुरू का बार - 2 धन्यवाद किया। वह दुकानदार बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि आपकी जगह मैं होता तो बिल्कुल ऐसा न करता। इससे मुझे लगा कि अगर गुरू की शरण प्राप्त न होती तो मैं भी ऐसा न करता।

(22) एक दुकानदार से मैंने तेल की कुछ शीशीयां खरीदी थीं। जिसमें उसने शायद एक शीशी गलती से ज्यादा डाल दी थी। परम् पूजनीय भगवान की कृपा से मैंने वह शीशी उसको वापिस करके सच्चा सुख लाभ किया है।

(23) एक बार मैंने अपने बड़े बेटे को जो अभी बिल्कुल छोटा था, किसी बात से खफ़ा होकर जोर से धक्का मारा था। जिससे वह दूर जाकर गिर गया और डर से काँपने लगा। अब मुझे वह मेरी नीच ज्ञति बहुत शर्मसार कर रही है। इसके परिशोध के लिए मैंने उसे एक पत्र लिख कर भेजा है और उससे क्षमा भी माँगी है। जो वह विदेश से हमारी सेवाएं कर रहा है उसके लिए भी उसका तह दिल से धन्यवाद किया है।

(24) एक बार एक छोटा सा लड़का हमारे खेत में पशु चरा रहा था। उसके साथ ही हमारी बरसीन का चारा था। मैनें गुस्से में पागल होकर

उसे कहा कि तू अन्धा है अगर तेरे पशु बरसीन में चले गए तो। इतने में अन्धा मैं हो गया और उसके एक थप्पड़ मार दिया। अब मुझे गुरू ज्योति में पता चलता है कि वह तो अन्धा नहीं था मैं ही अपने अहं के भाव से अन्धा था जिसने उस मासूम के बिना गलती के थप्पड़ मार दिया। अब मैं अपने निज के साधन में कई बार इसका पश्चाताप कर चुका हूँ।

(25) एक बार मैं और मेरे बड़े भाई साहब ने किसी एक और जन से मिलकर एक खरगोश को नहर की खड्डों से निकाल कर भगा-2 कर पकड़ कर मारा था। उसके लिए भी मैं जानवरों को दाने-पानी डालकर कुछ परिशोध का साधन करता हूँ।

(26) एक घटना यह है कि हमने गाँव पास ही ज़मीन ठेकों पर ली थी। टयूबवैल वाले कूएँ की खड्ड में एक जानवर ने बच्चे दे रखे थे। हमने कूएँ में काम करना था मैंने सोचा कि जानवर हमें तंग करेगा और मैंने ऊपर से एक मिट्टी का ढ़ेला फैंका और वह उस जानवर के जा लगा और वह बेचारा मर गया। मुझे बाद में इस को देखकर बहुत दुख महसूस हुआ और अब और भी ज्यादा दुख महसूस कर रहा हूँ। मेरा सारा जीवन नीच घटनाओं से भरा पड़ा है। अगर सन्मान के योग्य श्रीमान मुझ पर इतना संग्राम न करते तो अब तक और कितने पाप हो जाने थे। भगवान देवात्मा की ज्योति शक्ति ने मेरा कितना हित किया है उसका वर्णन मुझ तुच्छ की योग्यता में नहीं है। यह सब माननीय श्रद्धा के योग्य श्रीमान जी की कृपा से ही हुआ है।

(27) जब मैं तीसरी-चौथी कक्षा में पढ़ता था तो हम चार-पाँच लड़के मिलकर हाथों में डण्डे लेकर गलियों में घूमते-फिरते और गर्मी से बचने के लिए जो कुते दिवारो की परछाई में आराम कर रहे होते तो हम चुपके-2 दबे पैर जाते और उनको डण्डे मार कर उनकों तंग करके अपनी खुशी प्रगट करते। नरमें की खेती में से भी उन्हें ढूंढ कर मारते थे।

(28) घरों की छतों की शतीरों के ऊपर दोपहर को चिड़ियां बैठ जाती थी। उन्हें तड़के अन्धेरे कमरे में बंद कर कर भगाते और पकड़कर रंग लगाते।

(29) पशुओं को बैलों को गलत तरीके से मारकर, छोड़ कर और तंग करके खुशी लाभ किया करता था। अब यह घटनाऐं परम् पूजनीय भगवान देवात्मा की कृपा से फिल्म की तरह एक-एक करके आगे से निकलती हैं तो बहुत शर्म महसूस होती है। इन सबके लिए थोड़े ज्यादा परिशोध के साधन जारी हैं। सब के लिए दिल की गहराईयों से भरकर शुभकामनाऐं करने की चेष्टा करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि गुरू की रोशनी मेरे हृदय में ज्यादा से ज्यादा संचार हो और मेरी काली भूतनी शक्ल ज्यादा से ज्यादा लोगों में उजागर हो। जो लोग मेरा ऊपरी दिखावा देख कर मेरा सन्मान सत्कार करते हैं वह भी मेरी असली शक्ल से वाकिफ़ हो सके।

(30) गुरू की अपार अनुकम्पा से और श्रद्धा व सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी श्रीमान

बलबहादुर सिंह जी की अनथक मेहनत से उपकारियों के थोड़े-2 उपकारी रूप नज़र आए है। इस लोकवासियों, परलोकवासियों और उपकारियों के लिए मंगल कामना करता हूँ। गुरू के अथाह उपकारों को, उनसे पाई हुई बरकतों को भी गुरू की ज्योति में सामने लाने की कोशिश करता हूँ।

(31) जब कोई कुत्ता पागल हो जाता है तो वह सबसे पहले जो उसको रोटी डालता है, उसकी सेवा करता है और जो उसका हित चाहता है, उसको दवाई देने की कोशिश करता है, तो वह पागल सबसे पहले उसी को ही काटता है। ऐसी ही कुछ गतियां मुझ पागल से भी, अहंकार के पागलपन से हुई । जब मेरे विशेष और महान उपकारी मेरा सबसे ज्यादा हित चाहने वाले श्रद्धा और सन्मान योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने मुझे फोन किया कि हम फलां तारीख को सभा करवाने के लिए मल्लेका में आ रहे हैं मैंने श्रीमान जी से कहा कि श्रीमान जी जब कोई सभा सुनने नहीं आएगा तो आप दिवारों को सभा सुनाओंगे। इस बात से श्रीमान जी के पवित्र आत्मिक बोधी हृदय पर जो आघात पहुँचा होगा उसका ठीक-2 अनुमान लगाना नीच घृणाकारी, अबोधी आत्मा के लिए नामुमकिन और असम्भव है।

एक बार फिर श्रीमान जी हमारे गाँव सभा करवाने के लिए आए तो हम दोनों भाई अपना धान मण्डी में ले जाकर बेचने में मस्त रहे। उस वक्त शायद मैं एक सभा में ही शामिल हुआ था। इस प्रकार मैंने अपने विशेष हितकर्ता उपकारी का घोर अपमान किया। घोर अनादर किया। लेकिन जिस प्रकार एक माता अपने बच्चों से घोर से घोर उत्पीड़न सहकर भी बच्चों का भला चाहती है, उसी प्रकार सन्मान योग्य श्रीमान जी हमारे लिए अपना हितकारी रूप लेकर कुछ ही दिनों के बाद हमारे गाँव में 300 किलोमीटर चलकर हमारा भला करने के लिए पहुँचे। हमारा हमारी तुच्छ योग्यता के अनुसार कुछ कल्याण साधन हुआ। अब मैं अपने आप को बहुत शर्मिन्दा महसूस कर रहा हूँ। अपने रक्षाकारी, हितकर्ता का उपकारी रूप सन्मुख लाकर उसको बार-बार सज़दा करने को दिल करता है।

<u>श्रीमान सरताज सिंह जी :-</u> मैं सरताज सिंह S/o मनजीत सिंह बाजवा, गाँव केसूपूरा, सिरसा, हरियाणा। मुझे देवसमाज में आए लगभग 23-24 साल हो चुके है। मुझे इस दर (देव समाज) का रास्ता दिखाने श्री सुखदेव जी जोसन हैं। मैं और मेरा दोस्त सुखदेव मिरोक दोनों इक्ट्ठे देव समाज के मैम्बर 1997-98 में बने थे जब देव समाज का सालाना उत्सव 18D में शुभवती धर्मशाला में हुआ करता था। हम दोनों जवान थे व अविवाहित। देव समाज का मैम्बर बनने से पहले श्री बलबहादुर जी ने हमारे सेवकी में ग्रहण का फार्म (Form) भरा था। तब मुझमें देव समाज के बानी व गुरू महाराज के प्रति उतना आकर्षण व प्रेम नहीं था जितना आज है। शायद उतनी समझ-अक्ल व सूझ भी नहीं थी। हम दोनों दोस्त तो बस सुन्दर चण्डीगढ़ शहर घुमने आए थे। 4-5 वर्ष तक हम सभा

बीच में छोड़कर कभी बाजार तो कभी सिनेमा तो कभी मार्किट घूमने चले जाते। लेकिन देव समाज की किताबें पढ़ने व खरीदने का दौर चलता रहा। धीरे - धीरे जीवन में परिवर्तन आना शुरू हो गया। सबसे पहले माता - पिता के बारे में परिवर्तन आना शुरू हुआ। मेरी माता जी भैंसो का गोबर सर्दियों में उठाया करती थी। मैं 1999 - 2001 में देव समाज के महोत्सव सुनकर नया - नया वापिस घर लौटा था। गुरू महाराज की शिक्षाओं व माननीय श्रीमान श्री बलदेव सिंह व श्री बलबहादुर जी की सभाओं के असर ने मुझे धिक्कारा कि तू जवान है और माँ गोबर उठाती है चल उठा गोबर। दूसरा भाई भी मेरा जवान था, फिर क्या था, लग गया मैं गोबर उठाने। माँ ने बहुत रोका तू M.A. पढ़ा लिखा है। गाँव के लोग क्या कहेंगे, रहने दे। मैंने एक ना मानी उठाता रहा खुशी - खुशी। जादू हो गया था मेरे ऊपर। पढ़ाने के धीरे - धीरे ढ़ग बदलने लगे। पहले छात्रों (Students) को मैं पीटता था, गाली निकालता था। परन्तु श्री P.V. Kanal Ji की जीवनी व देव समाज सभा की सभाएं सुनने के बाद सारे व्यवहार बदल गए। बच्चों को ज्यादा समय देना, प्यार से समझाना, सहायता करना, छुट्टी के बाद भी पढ़ाना शुरू कर दिया। खुद के English के नोटस तैयार किए। सिर्फ देव समाज की रंगत थी जवान लड़कियों को English की टयूशन उनके घर में जाकर देकर चरित्र पर कभी आँच नहीं आने दी। लोग मेरे चरित्र पर यकीन करने लगे व मेरे पास टयूशन पर बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ने लगी जिसमें मेरा साथ मेरे दोस्त सुखदेव मिरीक जो मेरे पड़ोसी भी हैं ने भी पूरा साथ दिया। मेरे पिता जी सिक्ख धर्म में गहण विश्वास व प्रेम रखते थे। वे देव समाज में मेरे जाने का पूर्ण विरोध करते थे।

(1) 2005 या 2006 का महोत्सव नजदीक आ रहा था। मैंने उनका दिल जीतने व नाराज़गी दूर करने का नया तरीका निकाला। मैं उनकी निजी सेवा में जुट गया। उनके पैर दबाना, मालिश करना। उन्हें कोई ना कोई उपहार खरीद कर देना शुरू कर दिया। महोत्सव से पहले तक इतने खुश हो गए कि एक दिन बोले कि "तेरा गुरू सचमुच सच्चा वा महान है, तू खुशी खुशी चण्डीगढ़ जा मुझे कोई ऐतराज नहीं है।"

(2) इमानदारी का भाव गहरा होता गया। एक दफा पिता जी ज्यादा बीमार हो गए वह आर्मी हॉस्पिटल बठिण्डा में दाखिल थे। मैंने बाईक (Bike) सिरसा रेलवे स्टेशन पर छोड़ी व जान बूझकर Park में पीछे खड़ी कर दी कि 5 रूपये की पर्ची ना कटवानी पड़े। परन्तु इस घटना के 2 साल बाद मैं और होशियार सिंह (सुखदेव जी लण्डन के भाई) सोलन पर्वत आश्रम जा रहे थे। उसी सिरसा रेलवे स्टेशन से गाड़ी लेनी थी। उसी पार्किग वाले के पास गया व उसे जेब से 10 रुपये निकालकर 5 रुपये की पर्ची के व 5 रुपये हानि परिशोध के मैंने दिए वह हैरान होकर बोला वाह! भाई क्या बात है।

(3) मैं और मेरी पत्नी एक बार सिरसा गए हुए थे। मैंने नया - नया मोबाईल फोन खरीदा

था। मैं कहीं 2 - 3 मिन्ट के लिए वहाँ से गया। मोबाईल फोन मेरे बेटे ने ले लिया। गल्ती से उससे मोबाईल फोन सड़क पर गिर गया। मैंने तड़ाक से पत्नी को थप्पड़ दे मारा। वो बेचारी खामोश रही वह बोली कुछ नहीं। मुझे बाद में उस घटना का बहुत अफसोस हुआ। आज मैं अपनी पत्नी से भरे मन से उस घटना के लिए माफी माँगता हूँ।

(4) पैसा सभी को प्यारा लगता है। गीता में भी लोभ का जिक्र किया गया है। लेकिन देव समाज में आने के बाद पिछले 17 - 18 वर्षों में मैने कितने ही जरूरतमंद, बीमारों व रिश्तेदारों की पैसे से मदद की व पैसे को इक्ट्ठा नही किया। एक बच्चे की शादी का पूरा खर्च उठाया। एक लड़की की शादी पर मोटरसाइकिल खरीदकर दी। एक बीमार की MRI इलाज व दवा का सारा खर्च किया। दो दिन उसके साथ रहा अपने दोनों स्कूल पार्टनरों को एक-एक बड़ा लेख की फोटोकॉपी (Photostat) करवाकर अपने साथी अध्यापकों को दी। बच्चों की पढ़ाई के लिए सहायता की।

(5) प्रिंसीपल रहकर भी बच्चों को छुट्टी के बाद पढ़ाना। नीति शिक्षा करवाना। शिष्टाचार की शिक्षा देना, Prayer से पहले पढ़ाना व स्कूल में बिस्तर लगवाकर Final Exam से पहले उनके साथ सोना, पढ़ाना व उन्हें चाय बनाकर सुबह देने की सेवा की। यह गुरू महाराज का देवसमाज की सभाओं का ही करिश्मा था।

(6) हाँ अभी भी घमण्ड व गुस्से की गिरफ्त में हूँ परन्तु उम्मीद करता हूँ कि गुरू महराज की कृपा से देव प्रभाव मिलें व मेरे जीवन में भी शुभ परिवर्तन आए।

दोनों धर्म सम्बन्धियों कर ब्यान जबाने हाल से बता रहा था कि गुरू महाराज ने उन्हें क्या से क्या बना दिया है। गुरूदेव राज जी इतने प्रभावित हुए कि खड़े होकर यह गाने लगे, "तारणहारे गुरू हमारे नर और नारी शत: शत: तारे" उपस्थित जब भी साथ गाते लगे, बहुत स्वर्गीय नज़ारा था।

20 दिसम्बर महोत्सव का विशेष दिन - परम पूजनीय भगवान का शुभ जन्म दिन : सुबह 6½ बजे धर्म सम्बन्धी बाहर इक्ट्ठे हुए और भजनों का गान आरम्भ हुआ। गुरूदेव राज जी और केसूपुर की पार्टी ने बहुत जोश से भरकर भजनों का गान किया। सब धर्म सम्बन्धियों को एक - 2 हार दिया गया, किसी से कोई पैसा नहीं लिया गया। कुछ खुले फूल भी रखे गए। सूर्य उदय की घण्टी बजते ही भगवान देवात्मा की जय के नारे लगाए गए, और बैंड ने अपनी धुन शुरू कर दी, फिर "प्रगटे देव गुरू भगवान" नामक भजन का पुरजोर भावों से गान हुआ। जय ध्वनि के बाद फिर कुछ मिण्ट बैंड बजा, फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने स्टेज पर खड़े होकर बहुत जोश भरे शब्दों से परम पूजनीय भगवान देवात्मा के तपों, त्यागों और मानवता पर उनके उपकारों का पुरज़ोर शब्दों में ब्यान किया, उनके ब्यान के बाद बैंड पूरे जोर से बजने लगा और बहुत सारे सेवक, सेविका खूब नाचने लगे। खूब रौनक बढ़ाई बैंड वाले भी पूरे

जोश में आ गए थे।

फिर कतार बद्ध होकर धर्म सम्बन्धियों ने अपने अपने हार पूजनीय छवि के आगे रखकर प्रणाम का साधन किया। बहुत सुन्दर नज़ारा था। फिर 8½ बजे विशेष सभा का आयोजन हुआ।

<u>20 दिसम्बर 2021 विशेष सभा :-</u>

<u>सभापति माननीय श्रीमान यशपाल जी भल्ला।</u>

विकास के क्रम में लाखों वर्षों के संग्राम से देव शक्तियों और भगवान देवात्मा का प्रकाश होता है। यह देव शक्तियाँ चारों जगतों को नया रूप, नया जन्म देने की सामर्थ्य रखती हैं।

(1) देववाणी "यों वो विश्व के अन्तर्गत उनकी प्रत्येक घटना हि अदभुत है परन्तु उसमें विकासकारी घटनावली का क्रम और भी अत्यन्त अद्‌भुत और विचित्र है.....

विश्व के इस सारे वचित्र कार्य में यह उद्देश्य काम करता रहा है कि एक दिन वह इस मनुष्य जगत के भीतर ऐसा आत्मा उत्पन्न करे, कि मनुष्य और जगतों को छोड़कर जो अपने ही जगत के सम्बन्ध में हानियों और नाना प्रकार के दु:खों के उत्पन्न करने का कारण बन रहा है, उनका धीरे धीरे अवसान हो और पृथ्वी में विज्ञान मूलक सत्य धर्म की शिक्षा और साधन प्रणाली आदि के प्रचार से एक नया और सचमुच का "सत्संग" आरम्भ हो।' (देव जीवन का विकास भाग-1)

धर्म सम्बन्धियो! इस वाणी में सागर की गहराई और आकाश की ऊंचाई है।

(2) महोत्सव 1913 आर्विभाव से मानवता को चार वरदान मिले।

(क) देवात्मा के आर्विभाव से मानव जगत को सच्चा और पूर्ण धर्म शिक्षक मिला है।

(ख) अब यदि तुम उन चार सत्यों को सदा स्मरण रख सको, तो तुम्हारा ऐसा करना तुम्हारे लिए बहुत कल्याणकारी हो सकता है :-

★ जिस प्रकार तुम सूर्य और उसकी महिमा को सूर्य की ही ज्योति में देख सकते हो, उसके बिना नहीं देख सकते, उसी प्रकार तुम देवात्मा के प्रकृत रूप और उसके देव जीवन में विकसित होकर सत्य धर्म के सम्बन्ध में, कल्पना मूलक धर्म मतों के अतीत, विज्ञानमूलक जिन नाना प्रकार के पूर्णत: नए सत्यों की शिक्षा है, उन सत्यों और उनके ज्ञान और साधन की आवश्यकता औरउनकी महिमा की देवात्मा की ही अद्वितीय देव ज्योति को पाकर उपलब्ध कर सकते हो, बिना उसके कदापि और कभी नहीं।

★ देवात्मा के प्रति तुम अपने हृदय में श्रद्धा, विश्वास, पवित्रता और आकर्षण के उच्च भाव उत्पन्न और उन्नत करके और उनसे उनकी इस दुर्लभ देव ज्योति के लिए दीन भाव से आकांक्षी बन के ही उसे लाभ कर सकते हो, उसके बिना कदापि और कहीं नहीं।

★ देवात्मा के ही इन देव प्रभावों को पाकर

तुम अपनी – अपनी योग्यता के अनुसार नीच गतियों से पूर्ण मोक्ष और उच्च व धर्म जीवन में पूर्ण विकास लाभ कर सकते हो, उसके बिना कदापि और कभी नहीं।

★ देवात्मा के देव प्रभाव तुम जिन साधनों के द्वारा लाभ कर सकते हो, उनसे कट कर व उदासीन रहकर तुम्हारे आत्मा का धीरे धीरे पतित और नष्ट होना अवश्यम्भावी है। सारी देव वाणी का पाठ किया।

गुरू हो सदा तुम्हारी जय।

गूंज रही है गूंज विश्व में, सुनो सुनो यह लय।
मिथ्या और अशुभ के नाशक, अब हो गए उदय;
नीचता हो जाएगी क्षय।
नीच भाव धारी अति दुर्बल, हम मानव सन्तान;
शिरोमणि हो तुम दुनिया के, देव गुरू भगवान;
हो मंगलमय, तुम महिमामय।

(ग) भगवान देवात्मा के जन्म स्थान के सम्बन्ध में गीत

अकबरपुर तुम याद रहोगे दुनिया के इतिहास में,
तुझको शीश झुकाते हैं निज श्रद्धा के प्रकाश में।
तुम्हें बताऊं क्योंकर नगरी कैसा उच्च अधिकार मिला
तेरे भीतर से दुनिया को सच्चा धर्मावतार मिला
जिसका ज्योति फैल रही है भारत के आकाश में
अकबरपुर तुम.....

(घ) श्रीमान पी. वी कनल जी ने एक महासभा में फरमाया था।

भगवान देवात्मा एक मात्र सत्य उपास्य देव के श्री चरणों में श्रद्धा से पधारने वाले सौभाग्यवान आत्माओं!

देव युग यानि आत्मिक सत्य ज्ञान का और कल्याण का युग आरम्भ हो चुका है। सेवक दल और पाँचवे जगत का निर्माण हो चुका है। दुनिया का नया जन्म देने का भगवान देवात्मा का कल्याणकारी कारज शुरू है। उसकी एक कड़ी यह मुबारिक अवसर है यह बड़ा वरदान है। ऐ अधिकारी आत्माओं इस महा वरदान से भरपूर लाभ उठाओ।

भगवान देवात्मा को अपना परम कल्याणकारी और परम आवश्यक सम्बन्धी जानों और बाकी सब सम्बन्धियों को निम्न – अधिक वि नाशकारी सम्बन्धी जानों।

इन विचारों में यहाँ के दिन गुजारो और इन्हीं विचारों को अपने साथ लेकर जाओ।

योग्यता सबकी अपनी अपनी है। दीन और श्रद्धावान बनों जितना चाहो लाभ उठा लो।

झोलियाँ भर भर के जाओ और जाकर वितरण करो।

★ **<u>श्रीमान हितैषी सिंह जी की एक सभा 1918 यहाँ आकर हमने अपने ऊपर मेहरबानी नहीं की है</u>**

भगवान देवात्मा के साथ अपने आत्मिक सम्बन्ध को अनुभव करें उनके पावन जन्म महोत्सव पर पहुंचना किसी भी मनुष्य का बहुत बड़ा उच्च अधिकार है।

भगवान के साथ सम्बन्ध अनुभव करना और इस पावन तीर्थ पर आना भगवान या समाज के ऊपर मेहरबानी करना नहीं है बल्कि इसमें हमारा अपना

परम कल्याण है। जिस प्रकार रोटी खाना रोटी पर मेहरबानी नहीं, हवा में साँस लेना हवा पर मेहरबानी नहीं, सूरज की रोशनी और तेज़ से लाभ उठाना सूरज पर मेहरबानी नहीं। जैसे किसी बीमार का हस्पताल में जाना हस्पाताल पर मेहरबानी नहीं है, रोग निवारण के लिए दवाई का खाना दवाई पर मेहरबानी नहीं है। इसी तरह भगवान की देव ज्योति और देव तेज पाकर अपना आत्म कल्याण करना और इस लक्ष्य को लेकर इस तीर्थ पर आना भगवान देवात्मा और समाज पर कोई मेहरबानी नहीं। बल्कि अपने सार अस्तित्व आत्मा पर मेहरबानी है।

मुबारिक हैं वह आत्मा जो इस सच्चाई को देखकर इस अवसर को अपने लिए और अपने परिवारिक जनों के लिए कल्याणकारी बना सकेंगे।

(ङ) 1918 ईसवी भगवान महोत्सव की महिमा बता रहे हैं।

"यह महोत्सव इस पृथ्वी में एक सच्चा और अद्वितीय तीर्थ स्थान है, कि जिस पर पहुँचकर हर एक अधिकारी आत्मा जो हित लाभ करता है, उसका दृष्टांत इस पृथ्वी में कहीं नहीं है, और इस महोत्सव पर पहुँचने के लिए वह जिस कदर खर्च करता है, या जो तकलीफ़ उठाता है, उसकी यहाँ पहुँचकर जैसी सफलता होती है, वह किसी और तरह से नहीं होती और नहीं हो सकती। देवात्मा के जन्म महोत्सव पर पहुँचना प्रत्येक देव समाजी का विशेष और कड़ा कर्तव्य है।

(च) 1924 में आपने फरमाया कि मुझे विकासकारी विभाग का हुक्म है कि जब तक असंभव न हो जाए मैं अपना संग्राम करता रहूँगा। उन्हीं दिनों में आपने किसी समय कहा था कि मेरी हालत इस तरह है जैसे किसी को तलवार से घायल करके फैंक दिया गया हो। 1926 में आपने फरमाया कि अगर सम्भव होता तो मैं अपना दिल फाड़कर दिखाता कि तुम्हारी भलाई का उसमें कितना गहरा अनुराग है। 1927 और 1928 के महोत्सव के अवसरों पर आपके संग्राम को देखकर एक कर्मचारी साहिब ने लिखा है कि आपने औरों का तो बेड़ा पार कर दिया पर खुद आप महा जिसमानी संकट में फंस गए और मृत्यु शय्या पर लेट गए।

(छ) देववाणी

"हमारी ऐसी असहाय अवस्था कि हमारे विरोधियों के लिए यह विश्वास करना स्वाभाविक था कि अब इनके मिशन की अतिशिरी हो गई है और चारों ओर यह संवाद घोषित भी किया जाता था और हज़ारों लोग इस समाचार को सुनकर बहुत हर्ष प्रकाश करते थे।

इस महाकठिन संग्राम में मेरा शरीर चूर-चूर हो गया। सदा के लिए रोगी हो गया। धन सम्पत्ति की भी बहुत हानि हुई। प्रेस बन्द हो गया। कामकाज में बहुत विघ्न रहा।"

(ज) भजन

जान तोड़ी - दिल कभी तोड़ा नहीं।
जाती जिधर है सारी दुनिया-दिल उधर जोड़ा नहीं
लक्ष्य था जो सबसे आला-उससे मुँह मोड़ा नहीं।

हां अकेले आप थे - और बे - सरो सामान थे।
वक्त था जां कंदिनी का - घोर दुःख घमसान थे।
सत्य का यह त्याग भगवन सब हमारे वास्ते।
उमर भर संग्राम न्यारा सब हमारे वास्ते।

अपने जान पर खेल कर औरों का भला किया
अपनों से भी इतना दुख मिला कि जीना दुभर हो गया।

यह सभा बहुत प्रभावशाली थी, गुरू महाराज के रूप, उनके तपों वा त्यागों का वर्णन और उनकी देव वाणी का पाठ सब हृदयों को छूने वाला था। सभा के बाद जन धन की अपील हुई। पटियाले की प्रीतम कौर जी जो श्रीमान सुरजीत सिंह जी की बेटी हैं अपने बेटे को लेकर आई थी। उसने एक महीने तक शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। वीरपाल जी समराला भी अपने बेटे को लेकर आई थी, उसने भी बताया कि उसे यहां आकर बहुत खुशी मिली है। उसके बाद दान की अपील की गई। जो मोटे तौर पर इस प्रकार है :-

दान सूची

1. श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार की ओर से	2,00,000
2. श्रीमान यशपाल जी भल्ला के परिवार की ओर से	51,000
3. मुनीश जी, सुभाष जी और प्रेम जी के बेटे की ओर से	25,000
4. डाक्टर नम्रता बराड़	10,000
(उन्होंने प्रति महीने 10,000 देने का वायदा किया)	
5. जसविन्द्र सिंह जी	7,000
6. श्रीमान जगजीत सिंह जी	5,000
7. श्रीमान खुशपाल सिंह जी	5,000
8. डाक्टर नवजोत जी	3,150
(48000 के करीब खाने का खर्चा दिया)	
9. श्रीमान दूनी चन्द जी	2,200
10. श्रीमान जगीर सिंह जी	2,000
11. श्रीमान हेमराज जी	2,200
12. श्रीमान दीवान जी	2,100
13. प्रिंसीपल सरताज जी	2,000
14. श्रीमती सुरजीत कौर लहरी	1,500
15. धर्म सिंह जी चौहान	2,100
16. श्रीमान जसमेल सिंह जी	2,000
17. श्रीमान खेमचन्द जी	1,800
18. वीरपाल जी समराला	1,200
कुल दान :	**3,72,853.00**
कुल खर्च :	**69,731.00**

इसके बाद 1000 और 500 रुपये दान करने वाले बहुत से जन हैं, जिनके हम अभारी है।

पब्लिक लैक्चर, 20 दिसम्बर 2021, शाम 4.00 बजे :- श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

उन्होंने पहले श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान का परिचय कराया, कैसे वह अपनी प्रतिज्ञा पर अरूड़ रहने वाले हैं, भगवान के लिए कितनी श्रद्धा रखते हैं और पक्के ईमानदार हैं। फिर श्रीमान चौहान जी को लैक्चर के लिए निमन्त्रित किया, उनका **विषय था - परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अद्वितीय आर्विभाव**

देवात्मा का आद्वितीय आर्विभाव

सृष्टि के सरताज, देव सूर्य, सत्य और शुभ के पूर्णाग अनुरागी परम पूजनीय श्री देव गुरू भगवान के 171 वें शुभ जन्मोत्सव की हर्षोल्लास के साथ मनाने का 350 करोड़ की आबादी में से हम चन्द आत्माओं को ही यह अवसर प्राप्त हुआ है। इस दिन से बढ़ कर हमारे लिए और कोई शुभअवसर नहीं हो सकता इसलिए यह महोत्सव सब के लिए अतिशय शुभकर हो।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने देवधर्म की स्थापना, प्रचलित धर्मों की तर्ज पर इस श्रृंखला में एक और धर्म के जोड़ने के आशय से नहीं की थी। उन्होंने इस सत्य को साक्षात अनुभव किया कि हमारे धर्मों, धर्मपुरूषों और पैगम्बरों, धार्मिक ग्रन्थों, आयोजनों व अनुष्ठानों की वर्तमानता एवं मनुष्य को भला व हितकर बनाने के उनके दावों व प्रयासों के बावजूद भी मिथ्या और अशुभ की गतियों में वृद्धि ही होती जा रही है और सम्बन्धों में नीच जीवन की भरमार से नारकीय स्थिति से कुल मिला कर मनुष्य नर्क उपजा रहा है।

यद्यपि बहुत से विकासशील, दार्शनिक व वैज्ञानिक ऐसी आशा करते रहे कि कोई ऐसा धर्म स्थापित हो जो रूढ़िवाद, पराशक्तियों, अप्राकृतिक बातों और मिथ्या विकासों से परे विज्ञान मूलक और नेचर के नियमों पर आधारित हो जिसका अधिष्ठता एक अद्वितीय व आदर्श आर्विभाव हो जो अपने देव बोधों और देव भावों के विचार से सच्चा देवता हो। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है :-

★ भारत के महान कवि व विचारक रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा :- "संसार के उद्धारकर्ता हमारे दरिद्र देश में जन्म लेंगे और पूरब के क्षितिज से उनका देव संदेश संसार सुनेगा और मानव संसार असीम आशाओं से भरपूर होगा।"

कौन जानता था कि ऐसा देव सूर्य, एशिया के दूरतम क्षितिज से चढ़ चुका है। जो इस तरह की भविष्यवाणियां अनेकों विचारशीलों ने की हैं उसी विज्ञानमूलक, सार्वभौमिक एवं सर्वांग कल्याणकारी अद्वितीय धर्म को लाने हेतु परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने 16 फरवरी सन् 1882 ई. को लाहौर में देव समाज की स्थापना इस आशय से की जिसका उन्हीं के शब्दों में उच्चारण उचित होगा "मैं इस पृथ्वी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूँ कि जो इसी दुनिया में सब प्रकार के पापों और बुराईयों का नाश करता हो....."

ऐसा दुर्लभ संकल्प एवं अद्वितीय कारज करना किसी विशेष आविर्भाव के द्वारा ही संभव हो सकता था जो केवल देवात्मा में ही इस प्रकार की विशेषताएं सृजित हुई थी जिनका उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरी विशेषता' में किया। यह आठ प्रकार की विशेषताओं का वर्णन किया है (1) जन्म विषयक (गर्भ जात) विशेषता (2)

विकास कार्य प्रणाली की विशेषता (3) लक्ष्य विषयक (4) अटल विश्वास विषयक (5) महात्याग विषयक (6) शिक्षा विषयक (7) धर्म संस्थापन विषयक (8) धर्म संग्राम विषयक विशेषता इनके बारे में भगवान मुझ से देव जीवन का विकास" नामक ग्रन्थ में लिखते है :–

"अपनी पूजनीय माता के गर्भ धारण करने के दिन से मेरे आत्मा की विशेषता थी मनुष्य जगत के हज़ारों वर्ष के परिवर्तन कार्य से जैसे उसके किसी विभाग में पदोन्नति हुई है वैसे ही किसी विभाग में उच्चगति हुई हैं। इसी उच्चगति मूलक परिवर्तन के द्वारा मेरे कई पूर्वजों में ऐसी कितनी ही गरिमा आई थी कि जिन्होंने एक विशेष घटना के द्वारा एक विशेष समय में सम्मिलित होने का अवसर पाकर मेरे आत्मा को मार्तगर्भ में ही विशेष बना दिया और करोड़ों आत्माओं की तुलना में उसमें वह विशेष येाग्यता पैदा कर दी कि जससे वह धीरे धीरे विकसित हो कर एक पूर्ण रूप और पूर्णांग गठन को प्राप्त हो गया! यह मेरी गर्भ अथवा जन्मजात विशेषता थी और यह उसी प्रकार प्राप्त हुई थी जिस प्रकार भौतिक जगत के पदार्थो में परिवर्तन के अटल नियम से इस पृथ्वी में कुछ अस्तित्त्व साधारण पत्थर, कुछ लाल पत्थर, कुछ संगमरमर, कुछ नीलम, कुछ मणिक और कुछ हीरा बन गये।"

जिन नीच भावों में मनुष्यात्मा लिप्त है यथा ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा व घमण्ड उनसे देवात्मा जन्म से ही पूर्णत: रहित थे। सोलह वर्ष की उम्र तक उनमें हित विषयक 16 अनुराग विकसित हुए तथा (1) सत्य भाषण (2) सत्यगत अस्पष्ट कथन (3) सत्य ज्ञान उपार्जन (4) सत्य ग्रहण अनुराग (5) सत्य प्रतिज्ञा पालन (6) सत्य प्रचार अनुराग (7) सत्य समर्थन एवं (8) धर्म विषयक सत्य अन्वेषण आठ प्रकार के सत्य अनुरागों का विकास हुआ। हित एवं सत्य अनुरागी देवात्मा के देवरूप का हम एक उदाहरण से दृष्टांत दे सकते हैं कि देव समाज की स्थापना से पूर्व भगवान ब्रहम समाज से प्रेरित हुए 1875 ई में ब्रहम समाज के सभासद एवं आचार्य नियुक्त हुए। 1877 ई में लाहौर में आर्य समाज की स्थापना के समय स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भगवान देवात्मा को आर्य समाज का Vice President नामित किया तो भगवान ने यह कह कर कि मेरा विश्वास वैदिक देवी – देवताओं में नहीं है, इस पेशकश को ठुकरा दिया।

इस महाव्रत के ग्रहण करने से पहले भी भगवान की विरोधता होती थी परन्तु तदानन्तर उससे सैकडों गुणा बढ़कर होने लगी। विश्व के लाखों वर्ष के संग्राम से जिस अस्तित्व को इस पृथ्वी के लिए सर्वोच्च रूप से हितकर और सेवाकारी रूप में प्रकट किया था वह उसकी ओर से अत्यंत घृणित, नीच, अत्यंत बुरा व अधर्म समझा गया। श्रद्धा के स्थान पर घृणा का प्रचार हुआ। ऐसा कोई नीच अपराध न था जिसका उन्हें अपराधी न बताया गया हो कितने ही मुकदमें उनके विरूद्ध अदालतों में दायर हुए।

परन्तु यह देव शक्तियों का ही जादू था कि चारों ओर विरोधताओं के बावजूद भी देवात्मा का जीवन व्रत पूरा हुआ और मिथ्या विश्वासों की हार हुई। सरदार चन्दा सिंह के सारे नापाक मन्सूबे मिट्टी में मिल गए जो कहता था कि देव धर्म मिशन को तबाह करना मेरा जिन्दगी का मिशन है। सरदार गुरमुख सिंह जो कचहरी में भगवान पर जिरह करते थे - एक दिन भगवान ने उनके कन्धे पर हाथ रख कर कहा कि किसी बेगुनाह को सताने की भी हद होती है तो वह तुरन्त चन्दा सिंह का साथ छोड़कर भगवान के चरणों में झुक गए और अपना संपूर्ण जीवन भगवान के मिशन में अर्पण कर दिया।

भगवान फरमाते हैं कि उत्पीड़न के लगातार आघातों से मेरा शरीर बहुत रोगी और दुर्बल अवस्था में था... यह अजाब एक वा कई दिन वा कई सप्ताह का नहीं..... दस वर्षों तक मेरे प्रति घोर उत्पीड़न के बावजूद भी जब इर्ष्या व द्वेष की अग्नि ठंडी नहीं हुई तो मेरे अनुयायियों ने 1853 में मानहानि के मुकद्दमें दायर कर दिए। मेरे पक्ष में कोई सच्ची गवाही तक देने को तैयार न था, ऐसे लगातार घोर से घोर क्लेशों को सहते मैं जिस जिस दशा को प्राप्त हुआ हूं क्या और अजाब बाकी हैं जिसका मुँह देखना पड़ेगा। क्या मेरा मिशन नेचर के नियमानुसार नहीं? क्या वह कभी मिट सकता है? क्या वह उन्नति करने और फैलने से बिना रह सका है? हे आकाश! तू बोला हे पृथ्वी तू साक्षी दे। यह मेरे मुँह के शब्द न थे अपितु मेरे आत्मा से देव कोष की विलक्षण देव वाणी थी जो उस समय प्रकट हुई। इन धर्म बल से परिपूर्ण शब्दों की लहर से धरती हिल गई, आकश कांप उठा और मेरे इन प्रश्नों के उत्तर में गुप्त स्वर में यह गूँज उत्पन्न हुई : "निश्चय तेरा मिशन नेचर के नियमानुसार है यह उन्नति करने और फैलने के लिए है। हम इस बात की साक्षी देते है।

देवात्मा के तपों का फल यह हुआ कि इतिहास साक्षी है कि हमारे जीवनों में परिवर्तन आया है। हमारा कल्याण साधन हुआ है। हमारे व्यवहार बदले हैं। काश! हम सत्संगों में योग देकर और साहित्य का अध्ययन करके पूरा लाभ उठा सकें।

भगवान देवात्मा एवं उनके द्वारा स्थापित देवधर्म किन विशेषताओं के कारण अद्वितीय है, इस विषय पर उनका विवरण देना आवश्य हो जाता है: -

(1) यह नेचर के अटल और सत्य नियमों पर आधारित है देव धर्म ही एक मात्र विज्ञानमूलक व सार्वभौमिक और पूर्ण धर्म है।

(2) नीचजीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास ही मनुष्य का परम लक्ष्य है। उच्च जीवन का नाश ही सत्य धर्म है। उच्च जीवन सात्विक भावों की उत्पत्ति और विकास से होती है।

(3) बहुत से प्रचलित धर्मों में सम्बन्धों के माया जाल मिथ्या आदि करवा कर निकलने की शिक्षा दी है। इसके विपरीत देव धर्म की सत्य शिक्षा के

अनुसार विश्व एक है और उनके चारों जगत – भौतिक जगत, उद्भिद जगत, पशु जगत व मनुष्य जगत आपस में उसी तरह जुड़े हुए है जैसे शरीर के साथ मनुष्य के अंग जुड़े हुए है। भौतिक जगत से ही अन्य तीनों जगतों की उत्पत्ति और विकास हुआ है। विश्व के भीतर जिस – जिस सम्बनध में उच्च जगत मूलक एकता आती है वहीं शुभ की उत्पत्ति होती है। हम तमाम गतियां सम्बन्धों में ही करते है। सम्बन्धों में ही जीवन है, समबन्धों में ही मृत्यु है सम्बन्धों में ही स्वर्ग व नरक है। सम्बन्धों में ही विकास और विनाश है। उच्च गतिदायक सम्बन्ध विकासकारी व नीच गतिदायक सम्बन्ध विनाशकारी सूत्र कहलाते है। पूजनीय भगवान ने सम्बन्ध तत्त्व के सम्बन्ध में देवशास्त्र चौथे खण्ड की रचना करके सम्बन्धों के हितकर और पूर्ण मेल की अवस्था में व्यवहार करने के लिए प्राय: 800आदेश देकर स्वयं उन्हें अपने जीवन में अपना हमें उन पर चलने की शिक्षा दी है।

देव समाज का इतिहास साक्षी है कि हजारों नीच जीवनधारियों में देवात्मा से जुड़कर अपना व दूसरों का कल्याण किया है। हम उनके शुभ जन्मोत्सव पर संकल्प लें कि ऐसे परम हितैषी देव जीवनधारी के साथ जुड़े रहकर अपना व दूसरों का भला कर सकें ऐसे संभावना तभी है, जब हम उनके ग्रन्थों का अध्ययन करते रहें, सत्संगों में आते रहें और उच्च जीवनधारी व्यक्तियों के संपर्क में रहें व उनके व्यवहारों से हितकर जीव साबित हो। यह लैक्चर बहुत ही प्रभावदायक था, जैसे पूजनीय भगवान की सारी यात्रा को एक कूजे में बन्द कर दिया। सभापति जी ने उनका धन्यवाद किया।

<u>मंगलवार, 21 दिसम्बर 2021, सुबह 8.30 बजे : सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, विषय : सेवकों की प्रतिज्ञाओं वा सेवकों के ग्रहण के सम्बन्ध में।</u>

महिमा विषयक भजन का गान किया गया, उसके बाद परम पूजनीय भगवान देवात्मा का छवि द्वारा अर्चन किया गया, देव स्तोत्र के गान वा भजन के बाद सभापति जी ने सेवकों की प्रतिज्ञाओं का विस्तार पूर्वक ब्यान किया, जिसमें उन्होंने बताया कि हमें अक्सर 8 प्रकार के पाप सम्बन्धी प्रतिज्ञाएं ही याद रहती हैं, असल में हमारी चार प्रकार की प्रतिज्ञाएं हैं।

<u>पहली :</u> भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में जिसमें मूल वाक्य वा मिथ्या सम्बन्धी प्रतिज्ञा है।

<u>दूसरी :</u> दुराचारों के सम्बन्ध में, जिसमें 8 पापों के सम्बन्धी प्रतिज्ञाएं आती है।

<u>तीसरी :</u> सदाचार के सम्बन्ध में।

<u>चौथी :</u> नियत दान आदि देने के सम्बन्ध में।

इन सारी प्रतिज्ञाओं का सभापति जी ने विस्तारपूर्वक ब्यान किया। और उसके बाद भाव प्रकाश की सभा शुरू हुई, जिसमें सभापति जी ने भाव प्रकाश के लिए उपस्थित जनों को निमन्त्रित किया।

भाव प्रकाश

हरदेव सिंह जी : श्रीमान जी के पैरों में सिर रखकर प्रणाम किया और बताया कि श्रीमान जी ने जो गुरू के प्रभाव हम तक पहुँचाए हैं, उसके कारण मैं अपनी माँ की कैंसर में सेवा कर सका, मांसाहार से बच गया, बदचलनी के वलवले उठते है, मैं बहुत शर्मिंदा हूं। पीली पगड़ी नहीं रखी। मैं आलसी हूं, मैं इन दोनों कमज़ोरियों को दूर करने का यत्न करूंगा।

सुखदेव सिंह जी : (सरताज सिंह जी के स्कूल के Partner) हमने कभी gratitude (कृतज्ञता) का नाम भी नहीं सुना था। हमारे सम्बन्धों में gratitude (कृतज्ञता) 1% भी नहीं है। मेरी माता के त्याग को अब याद करता हूं। प्रण करता हूं कि मैं अलार्म लगाकर पुस्तक पढ़ता हूं। अब यदि मैं यह किसी दिन ऐसा न किया, तो अपने पर स्वयं जुर्माना लगाऊंगा।

हेमन्त जी पदमपुर : मैं गंगा नगर से आया हूं, यहां आकर ही पता लगता है कि शुक्रगुज़ारी क्या होती है। मैं अपनी जन्मदाता माँ की सेवा करनी है।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि यह बहुत सेवाकारी वजूद हैं। एक बेसहारा माँ की वर्षों तक अपनी माँ की तरह सेवा की। उनकी सब जरूरतें पूरी की निस्वार्थ भाव से, परन्तु उस माँ ने मरने से पहले अपना मकान उनके नाम कर दिया। इनका भाव लेने का नहीं था, सेवा करना था, परन्तु कहते है कि "सेवा का मेवा मिले" यह ज़रूरी नहीं, परन्तु इन्हें मिला। अब भी बज़ुर्गों की सेवा में लगे रहते हैं।

श्रीमान सरताज सिंह जी : यहां आकर बैटरी चार्ज हो गई है। डाक्टर नवजोत जी का धन्यवाद करता हूँ, जिस प्रकार उन्होंने किचन का प्रबन्ध किया। उनकी बहन जी ने तीनों टाईम खड़े रहकर किचन को सम्भाला। उनका बहुत - 2 धन्यवाद।

भजनी जी : यहाँ के वातावरण ने जादू किया है। मेरा दिल कठोर हुआ पड़ा था। मुसीबत पड़ने पर श्रीमान जी ने हमारी सहायता की। मुझे यहाँ से बहुत कुल मिला है। मैं बहुत खुश हूँ। सबका दिल से धन्यवाद करती हूँ। अपने भाई सुखदेव जी के उपकारों का बदला नहीं दे सकती। 5 वर्षों से उसके दर्शन नहीं किए। सबका धन्यवाद।

जगीर सिंह जी : सुखदेव जी का बहुत 2 धन्यवाद, नशों और पापाचार से छुटकारा मिला है। मैं बहुत ईर्षावान था। कुछ घटने लगा है। गुरू महाराज की कृपा से सम्बन्ध बहुत बेहतर हुए हैं। नारकीय जीवन से निकला हूँ। अब पत्नी की सेवा करनी है। यहाँ आकर कुछ होश मिलती है। मैं बचा रह सकूँ।

श्रीमान सुन्दर लाल जी : पहले श्रीमान जी के पावों में सिर रखकर प्रणाम किया। आँखों से आंसू बह रहे थे। मैं नीच जीवनधारी हूँ। मिथ्या की दलदल से निकला हूँ। बहुत दुःख की बात है कि बच्चे नहीं आए, जो ऐसे वातावरण से लाभ उठा सकते। हम किसी का सन्मान नहीं करते थे। हमें बचाया गया है।

गुरूदेव राज जी : बदचलनी से गुरू ने बचाया है। अपने को पवित्र रखने का यत्न करूँगा। माँ की जितनी सेवा करनी चाहिए अब सेवा करूँगा। उनकी 86 वर्ष की उमर हैं, उन्होंने हमारी बहुत सेवा की है।

बूटा सिंह जी : मुझे माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की सेवाएं याद आती रही। श्रीमान जी ने कई बार मेरी मदद की है। मेरा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी से अच्छा रिश्ता नहीं था, परन्तु एक बार मेरी धर्म पत्नी बहुत बीमार हो गई। उसके सारे शरीर पर फोड़े हो गए, वह रिस रहे थे। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को कहा कि उनकी मदद करो। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कार लेकर मेरी पत्नी को लेकर गए। कहीं इलाज न होता था। आखिर वह अच्छे हस्पताल में ले गए और उनका ईलाज हो गया। उससे मेरा रिश्ता श्रीमान बलबहादुर सिंह जी के साथ भी ठीक हो गया। इन दोनों के उपकार नज़र आते रहे हैं। मैं इन्हें धन्यवाद देता हूँ।

श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी : पहले सभाओं से कोई लाभ नहीं होता था, formality के लिए महोत्सव पर आता था। परन्तु धीरे 2 लाभ होने लगा। "मुझ में देव जीवन के विकास" के पाठ से बहुत लाभ हुआ है। आगे से ज़रूरत पड़ने पर 5 - 7 दिन पहले आया करूँगा। यहाँ आकर बहुत लाभ हुआ है।

दविन्द्र कौर : (पत्नी श्रीमान सरताज सिंह जी) श्रीमान जी मैं बराड़ परिवार से हूँ। मैं बहुत ज्यादा अण्डे खाती थी। अब 15 वर्ष से बची हुई हूँ। छोटी सी बच्ची को पीटती थी ताकि वह पढ़ाई में सबसे आगे रहे। 4½ वर्ष के बच्चे ने मेरे Purse से 100 रुपये निकाल लिए, जब मुझे पता लगा तो उसे बहुत मारा, अब अपने पर शर्मिंदगी हो रही है। स्कूल में मैं बच्चों को पढ़ाती हूँ तो बेटी कहती है कि माँ- माँ बच्चों को मारना नहीं। मैं अपने बच्चों से क्षमा माँगती हूँ। अब बच्चों को पढ़ाने में सहनशील होने का यत्न करती हूँ, और भी करूँगी।

श्रीमान जसकरण जी : श्रद्धेय श्रीमान जी, मैं बहुत वर्षों से यहाँ सभा सुनने के लिए आ रहा हूँ। इन सभाओं में मुझे सम्बन्धों के विषय में बहुत ज्ञान मिला है। मैं जाकर अपने भाईयों से अच्छे व्यवहार करूँगा। इस महोत्सव पर मैं यह प्रण करके जाता हूँ।

श्रीमती सुरजीत जी बराड़, भल्ला जी, डाक्टर नवजोत जी, जसविन्द्र जी, सुखदेव जी,

Published on 5th of the month
28
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

गौतम जी सबके आगे झुक रहा हूँ और उनका धन्यवाद करता हूँ।

श्रीमान गोपाल कृष्ण लिखवकर भेजा:

सब धर्म सम्बन्धियों को प्रणाम सहित सत्यदेव जी की जय। पूजनीय गुरूदेव के जन्म महोत्सव का सारा प्रोग्राम बहुत हर्षोल्लासपूर्ण व प्रेरणादायक रहा। सभाओं में बैठकर मान्सिक ज्ञान साफ होता महसूस होता है, अपने चारों तरफ ध्यान भी जाता है नैतिकता अथवा उच्च गुणों से युक्त भावों को भी खुराक मिलती महसूस होती है। एक समय में अपने नीच व घटिया भावों की हालत व उसके परिणाम देखकर शुरू के असरों में यह लाईन लिखी थी जो कि अब भी उच्च असरों में कई बार सामने आती रही व अन्दर तक रूलाती रही कि बदबू आती है, सड़ान्ध आती है

शेष पृष्ठ 2 पर

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : –श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री– **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts